446
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1175/1021

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 446

891.431
V59J

बिला इजाजत कोई साहब न छापें

ॐ

जंग आज़ादी

मुसन्निफ़

"महाशय मोती राम वर्मा"

बदायूनी

शहर देहली कटड़ा बड़ियां

पेशा आज़ादी

सन् १६३० ई०

जे० राम प्रेस देहली में छपा

मूल्य १ आना

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

J.M.P.O.

प्रार्थना

अब तो भारत वर्ष को आज़ाद कर परमात्मा।
मुद्दतों से पारहे हैं कष्ट सब धरमात्मा॥
इस हकूमत के हुकम से होरहे बेजार सब।
जुल्म हम पर कर रहे हैं ज़ालिमाना सख्त अब॥
सहते २ थक गए अब तो सहा जाता नहीं।
कहते २ थक गए अब तो कहा जाता नहीं॥
देखें वह दिन कब आता है ऐ खुदा जल्द दिखला वह दिन।
ऐ कांग्रेस तू ही बतला आज़ादी होवेगी किस दिन॥
करने का कुछ गम हम को नहीं उतरे हैं जंग में ठोक के खम।
स्वराज्य लिये नहीं छोड़ेंगे जब तक कि हमारे दम में दम॥

गज़ल

वतन आज़ाद करने की यह दिल अपने में ठानी है।
धरम पर हट के मर जायें तो क्या मरने में हानी है॥
यह सब को बात रोशन है तवारीखों से साबित है।
हमारे ही बजुर्गों की यह देहली राज धानी है॥
जो नंगे भूके आये थे हमारे देश भारत में।
उन्हीं की आज हर शै है उन्हीं की हुक्मरानी है॥
किया कर अपनी पालीसी कि लूटा हिन्दू मुसलिम को।
हिलाये होंट भी गर हम तो आफ़िल नागहानी है॥
जुलम ज़ालिम का सहना अब नहीं हम को गवारा है।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 446
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

यह रसिया गा २ के सुनावे। जोश ज़नानों को आजावे
हो रहा वमीमी तैय्यार। जंग में पकड़ूंगी तलवार।

बतर्ज़ राधे श्याम

वायसराय से फ़रयाद

दोहा :- मुद्दत करते हो चुका अदल दाद और राज
अब तुम से कुछ अर्ज़ है वायसराय महाराज
पालिसी तुम्हारी अंग्रेज़ी भारत वासिन पर खूब चली।
रिश्वत खोरी वेईमानी भारत में फैली गली गली॥
थी फूट हमारे भारत में इस से तुम्हारा काम चला।
इस ही पापिन हतियारन ने घुटवाया हमारा तुम से गला॥
जब तक जो कुछ गुज़री गुजरी अब आगे को कुछ ख्याल करो
जो गांधी जी फरमाते हैं तुम उस को अब मंजूर करो॥
जो उन के स्वाल ग्यारा हैं बस उन को पूरा कर दीजे।
गर इस में उज्र तुम्हें कुछ है तो वतन को अपने सफर कीजे
कहने का काम हमारा है मानो मानो या मत मानो
गांधी जी सखुन के पक्के हैं अंजाम को उसके तुम जानो॥
कड़ा :- सब्र बडी है चीज़ सब्र जालिम मत लेवे।
मरे बैल की खाल भसम लोहा कर देवे॥
रख दिल में अब धीर भारत मत रोवे।
गांधी जी सा सपूत पूत विरला ही होवे॥

अंग्रेजी चालाकी

दोहा :- जो कुछ यहां अंग्रेजी है सब का एक ख्याल
इसी सबब से आज तक बना रहा इक़बाल ॥

जब से भारत में आये हैं उस दिन से कर रहे खूंरबारी ।
अब पुन्न तुम्हारा खतम हुआ आगई जवाल की ही वारी ॥
रग रग की हमारी चूसा है बन कर के जोंक सब खून पिया ।
नहीं खून का कतरा छोड़ा है सब जिस्म हमारा खुश्क किया ॥
दौलत इज्जत हुरमत न रही दुनिया में जिये तो खाक जिये ।
अब तलक तो हम हंसते ही रहे जो कुछ भी तुम ने सितम किये ॥
हुए बहुत बादशाह भारत में नहीं किसी ने इतना ज़ुल्म किया ।
कर पानी नमक पर लगा दिया मिट्टी मलवे पर लगा दिया ॥
अब तलक तो हम सोते ही रहे अब जाग उठे नहीं सोवेंगे ।
अब खूब समझ लो तुम दिल में भारत से तुम को खोवेंगे ॥
क्या तुमने हमें समझ रक्खा इंसान हैं हैवान न हम ।
देखना एक दिन वह होगा हम करें तुम्हारा नाक में दम ॥

कड़ा :- भारत माता दुखी दुखी गऊ मात हमारी
वे क़सूर वे गुनाह चली गरदन पे कटारी
किसे सुनावें बिपत सुने नहीं अत्याचारी
मन में लेव विचार ज्ञान सब को है प्यारी
फ़ंसे लोभ में उन्हें कहो कैसे समझावे
हत्यारी तो सदा रहम दिल में नहीं लावें

जवाहर लाल के नहरू के यही दिल में समानी है ॥
खुशी से अब निकल जाओ हमारे देश भारत से ।
तुम्हारी हम ग़रीबों पर यही अब मेहर बानी है ॥
छिड़ी है जंगे आज़ादी कि देखो क्या करे ईश्वर ।
ग़ज़ल वर्मा की गा गा कर हमें सब को सुनानी है ॥

ज़ालिम व बुज़दिलों से निवेदन ।

दोहा हाथ जोड़ बिन्ती करूं सुनिए नाथ पुकार
अब अंग्रेजी राज में हो रहा अत्याचार

कर लगादिया हर वस्तु पर नहीं छोड़ा नमक तथा पानी ।
हम उम्र को क्यों कर बसर करें बरबाद हो रही जिंदगानी ॥
गांधी जी ने समझाया बहुत नहीं समझते इन की राज़ी है ।
हम तन मन धन सब खो चुके आखरी जान की बाजी है ॥
यह जंग जवांमर्दों की है बुज़दिलों का इस में काम नहीं ।
सब सूर वीर हों वालिन्टियर बुज़दिला लिखावे नाम नहीं ॥
फांसी हो जेल या सर हो क़लम नहीं पीछे क़दम हटायेंगे ।
जिस तरह बने इस तरह से हम ज़ालिम का चिराग़ बुझायेंगे ॥
हम करेंगे अपनी करबानी भारत माता क्यों रोती है ।
सब ऋषि मुनि यह कहते हैं हां विजय सत्य की होती है ॥
कड़ा :—

जीत सत्य की हुई फतह गांधी की होगी ।
ऋषि मुनि सब कहें कहें सन्यासी जोगी ॥

और करें ना वह भी क़स्द जो हो तन से रोगी
और करें ना वह भी कस्द जो हों रस के भोगी

एक बहादुर स्त्री का गायन

वतर्ज़ रसिया

पीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार
गाढ़े के सब विस्तर बनाओ । सारी पब्लिक को पहनाओ
और मैं करूं सूत तैय्यार । जंग में ॥
ऊंच नीच सब को बतलादो । गांधी का पैगाम सुनादो
मैं भी करूं नमक तैय्यार । जंग में ॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी । बिना काल के नहीं मरूंगी
गोली खाने को तैय्यार । जंग में ॥
भारत को आज़ाद करूंगी । दुश्मन को बर बाद करूंगी
कुछ मत सोच करो भरतार । जंग में ॥
असहयोग की फ़ौज सजाऊं । कांग्रेस की तोप लगाऊं
दुशमन भगें समन्दर पार । जग में ॥
गांधी जी बन रहे कलन्दर । शशोपंज में पड़गये बंदर
देखो कहा करे करतार । जंग में ॥
जब गांधी ने कदम उठाया । गवर्मेंट का दिल दहलाया
देवी हो रही है तैय्यार । जंग में ॥
आज़ादी की छिड़ी जंग अब । बनो नायडो सरोजनी सब.
बहनो हो जाओ हुशियार । जंग में ॥

मिटियो ऐसा राज मिटैं यह अत्याचारी
हम पर भारी विपत हरो अब कृष्ण मुरारी ॥

खद्दर प्रचार

दोहा :- खद्दर तन पर धार लो देय विदेशी त्याग
और जितना विदेशी पारचा उस में लगा दो आग

खद्दर से बंदर डरते हैं फिर क्यों नहीं इसे पहनते हो
बंदरों से तुम्हें मुहब्बत है जो खद्दर नहीं पहनते हो ॥
जब खद्दर तन पर धारेंगे तो बंदर सारे भागेंगे ।
हम अपनी कुव्वत बाजू से भारत आजाद करायेंगे ॥
कड़ा :- देय विदेशी त्याग भाग बंदर सब जावें ।
दूर होवें सब कष्ट सभी सज्जन सुख पावें
वर्मा की यह कथन कहो कैसे समझावें ।
होयें सिद्ध सब काम चित जब सज्जन लावें ॥

लावनी

जार्ज पंजुम की हुई है जब से दादी
तब से भारत की होने लगी बर बादी ॥
रहा उस के राज में अमन हर तरह जारी
थी खुश व खुर्रम हर तरह से पब्लिक सारी
किया उस ने अदल इंसाफ़ न हिम्मत हारी
थी एडवर्ड हफतुम की वह महतारी
थी मल्का विक्टोरिया नाम बादशाह जादी । जार्ज पंजुम की ।

सरकार ने अब ऐसे क़ानून बनाये।
वे महसूली कोई चीज़ न खाने पाये॥
वे ईमानो रिश्वत खोरों के मान चढ़ाये
सत्य वादी मनुष्य सज्जनों के मान घटाये
इन्हीं लक्षणों से होगी अब बरबादी। जार्ज पंजुम की०
हर गांव गांव शहरों क़सबों में खल बल
सारी पब्लिक बन रही है अब सेवा दल
देखना किसी दिन नव युवकों का तुमबल
ज़ालिमों के उस दिन मिट जावेंगे छल बल
इस तरह हमारी होवेगी आज़ादी। जार्ज पंजुम की जब०
पड़ रहे फ़क़स में हाय हाय करते हैं।
वे आब व ताब के बिला मौत मरते हैं
करते हैं क़हर व ग़ज़ब नहीं डरते हैं।
वे खता किये बे गुनाह जेल भरते हैं
हर तरह पे हम खुश हमें न कुछ ग़म शादी। जार्ज पंजुम की
सन् सतावन में ग़दर पड़ा था भारी।
हो तवारीख तो पढ़ लो हालत सारी॥
क्यों करोगे अपनी और हमारी ख्वारी।
लो सोच समझ अब है वर्मा की बारी॥
महात्मा गांधी जी को समझो हादी। जार्ज पंजुम की जब०

सर्व प्रकार की पुस्तके मिलने का पता:-
C/O भारत बुक एजंसी नई सड़क देहली